लैंगिक असमानता का अध्ययनः हरियाणा के नूहं जिले के संदर्भ में

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

राजनीति विज्ञान में पीएच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिक

जेवीएन डॉ. सपना गहलोत

शोधार्थी

जेवीएन मोनिका

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग

फैकल्टी ऑफ एजुकेशन एडं मेथडोलॉजी

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,

जयपुर (राजस्थान) भारत

2021

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1	**पृष्ठभूमि**	1–4
2	**विषय एवं अध्ययन क्षेत्र**	4–8
	लैंगिक असमानता का अध्ययनः हरियाणा के नूहं जिले के संदर्भ में	
3	**उद्देश्य**	8–9
4	**अध्ययन की रूपरेखा**	9–10
	1. नूहं जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन 2. लैंगिक असमानता से संबंधित साहित्य समीक्षा 3. सामाजिक एवं राजनीति क्षेत्र में लैंगिक असमानता की स्थिति 4. ग्रामीण महिलाओं की स्थिति परिवर्तन में सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास एवं प्रभाव 5. निष्कर्ष	
5	शोध परिकल्पना	10
6	शोध प्रश्न	10–11
7	शोध पद्धति	11–12
8	साहित्य अवलोकन	12–16
9	संदर्भ ग्रंथ सूचली एवं वेब लिंक	17–18

लैंगिक असमानता का अध्ययनः हरियाणा के नूहं जिले के संदर्भ में

1. पृष्ठभूमि

प्राचीन भारतीय समाज में लैंगिक असमानता

पुरूष तथा स्त्री एक जैविकीय अवधारणा है। यदि इस तथ्य के साथ किसी प्रकार की असमानता जोड दी जाती है तो यह एक सामाजिक अवधारणा बन जाती है, जिसे लैंगिक असमानता कहा जाता है। इन सामाजिक अवधारणाओं का प्रयोग पुरुषों तथा स्त्रियों के सामाजिक गुणों के कुल एवं समाज द्वारा उनसे अपेक्षित व्यवहारों के लिए किया जाता है। किसी भी व्यक्ति की सामाजिक पहचान इन्हीं अपेक्षाओं से होती है। ये अपेक्षाएँ इस विचार पर आधारित है कि कुछ गुण, व्यवहार, लक्षण, आवश्यकतायें तथा भूमिकायें स्त्रियों के लिए प्राकृतिक हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि लिंग केवल जैवकीय नहीं है क्योंकि लडका या लड़की जन्म के समय यह नहीं जानते हैं कि उन्हें क्या बोलना है, किस प्रकार का व्यवहार करना है, क्या सोचना है अथवा किस प्रकार से प्रतिक्रिया करनी है।[1] प्रत्येक समाज में पुर्ल्लिंग तथा स्त्रीलिंग के रूप में उनकी लैंगिक पहचान तथा सामाजिक भूमिकायें समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से निश्चित की जाती हैं। इसी प्रक्रिया द्वारा उन्हें उन सांस्कृतिक अपेक्षाओं का ज्ञान दिया जाता है जिनके अनुसार उन्हें व्यवहार करना है। ये सामाजिक भूमिकायें एवं अपेक्षायें एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में अथवा एक ही समाज के भिन्न युगों में भिन्न होती है।[2]

लैंगिक असमानता को सामान्यतः निम्नलिखित सात रूपों में देखा जा सकता है–

---

[1] गुप्ता, सुशील; (2005): 'वीमैन डवलपमेंट इन इंडियाः ए कम्प्रेटिव स्टडी'
[2] गुप्ता, सुशील; (2005): 'वीमैन डवलपमेंट इन इंडियाः ए कम्प्रेटिव स्टडी'

मृत्युदर असमानता – विश्व के अनेक क्षेत्रों में स्त्रियों एवं पुरुषों में असमानता का एक बर्बर प्रकार सामान्यतया स्त्रियों की उच्च मृत्यु दर में परिलक्षित होता है जिसके परिणामस्वरूप कुल जनसंख्या में पुरुषों की संख्या अधिक हो जाती है। मृत्यु असमानता अत्यधिक मात्रा उत्तरी अफ्रीका तथा एशिया (चीन एवं दक्षिण एशिया सहित) में देखी जा सकती है।

प्रासूतिक असमानता – गर्भ में ही बच्चे के लिंग को ज्ञात करने सम्बन्धी आधुनिक तरीकों की उपलब्धता ने लैंगिक असमानता के इस रूप को जन्म दिया है। लिंग परीक्षण द्वारा यह पता लगाकर कि होने वाला शिशु लड़की है, गर्भपात करा दिया जाता है। अनेक देशों में यह प्रवृत्ति विद्यमान है। यह उच्च तकनीकी पर आधारित असमानता है।

मौलिक सुविधा की असमानता – मौलिक सुविधाओं की दृष्टि में भी अनेक देशों में पुरुषों एवं स्त्रियों में असमानता स्पष्टतया देखी जा सकती है। कुछ वर्ष पहले तक अफगानिस्तान में लड़कियों की शिक्षा पर पाबन्दी थी। एशिया तथा अफ्रीका के अनेक देशों के साथ–साथ लैटिन अमेरिका में लड़कियों को लड.कों की तुलना में शिक्षा सुविधायें बहुत कम उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त अनेक अन्य मौलिक सुविधाओं के अभाव के कारण स्त्रियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के अवसर ही प्राप्त नहीं हो पाते हैं और न ही वे समुदाय में अनेक कार्यक्रमों में सहभागिता कर सकती हैं। यद्यपि अब इस स्थिति में दिनोंत्तर परिवर्तन आता जा रहा है।

विशेष अवसर असमानता – यूरोप तथा अमेरिका जैसे अत्यधिक विकसित एवं अमीर देशों के साथ–साथ अधिकांश अन्य देशो में उच्च शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण में लैंगिक पक्षपात स्पष्टतया देखा जा सकता हे।

व्यावसायिक असमानता – व्यावसायिक असमानता भी लगभग सभी समाजों में पाई जाती है। जापान जैसे देश में, जहाँ पुरुषों का उच्च शिक्षा प्राप्त करने एवं अन्य सभी प्रकार की मौलिक सुविधायें उपलब्ध हैं, वहाँ पर भी रोजगार एवं व्यवसाय प्राप्त करना स्त्रियों के लिए पुरुषों की तुलना में काफी कठिन कार्य माना जाता है।

स्वामित्व की असमानता – अनेक समाजों में सम्पत्ति पर स्वामित्व भी पुरुषों एवं स्त्रियों में असमान रूप से वितरित है। मौलिक घरेलू एवं भूमि सम्बन्धी स्वामित्व में भी स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में काफी पिछड़ी हुई हैं। इसी के परिणामस्वरूप स्त्रियां वाणिज्यकीय, आर्थिक तथा कुछ सामाजिक क्रियाओं से वंचित रह जाती हैं।

घरेलू असमानता – परिवार अथवा घर के अन्दर ही लैंगिक सम्बन्धों में अनेक प्रकार की मौलिक असमानतायें पाई जाती हैं। घर की सम्पूर्ण देखरेख से लेकर बच्चों के पालन–पोषण का पूरा दायित्व महिलाओं का होता है। अधिकांश देशों में पुरुष इन कार्यों में स्त्रियों की किसी प्रकार की सहायता नहीं करते हैं। पुरुषों का कार्य घर से बाहर काम करना माना जाता है। यह एक ऐसा श्रम–विभाजन है जो स्त्रियों को पुरुषों के अधीन कर देता है।[3]

भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नही रही है। इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहे हैं। उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार–चढ़ाव आते रहे हैं तथा उनके अधिकारों में तदनरूप बदलाव भी होते रहे हैं। **वैदिक युग** में स्त्रियों की स्थिति सुदृढ़ थी, परिवार तथा समाज में उन्हे सम्मान प्राप्त था। उनको शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। सम्पत्ति में उनको बराबरी का हक था। सभा व समितियों में से स्वतंत्रतापूर्वक भाग

[3] व्हाइटिंग,बीटराइस एंड एडवर्ड,कारोलेन; (1973): ए क्रॉस कल्चरल एनालिसिस ऑफ सेक्स डिफरेंसेज इन द बिहेव्हियर ऑफ चिल्ड्रन एज्ड थ्री थ्रो इलेवन, जरनल ऑफ सोशल सायकोलॉजी

लेती थी तथापि ऋग्वेद में कुछ ऐसी उक्तियां भी हैं जो महिलाओं के विरोध में दिखाई पड़ती हैं। **मैत्रयीसंहिता** में स्त्री को झूठ का अवतार कहा गया है। ऋग्वेद का कथन है कि स्त्रियों के साथ कोई मित्रता नही है, उनके हृदय भेड़ियों के हृदय हैं। ऋग्वेद के अन्य कथन में स्त्रियों को दास की सेना का अस्त्र–शस्त्र कहा गया है। स्पष्ट है कि वैदिक काल में भी कहीं न कहीं स्त्रियां नीची दृष्टि से देखी जाती थीं। फिर भी हिन्दू जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह समान रूप से आदर और प्रतिष्ठित थीं। शिक्षा, धर्म, व्यक्तित्व और सामाजिक विकास में उसका महान योगदान था। संस्थानिक रूप से स्त्रियों की अवनति **उत्तर वैदिककाल** से शुरू हुई। उन पर अनेक प्रकार के निर्योग्यताओं का आरोपण कर दिया गया। उनके लिए निन्दनीय शब्दों का प्रयोग होने लगा। उनकी स्वतंत्रता और उन्मुक्तता पर अनेक प्रकार के अंकुश लगाये जाने लगे। **मध्यकाल** में इनकी स्थिति और भी दयनीय हो गयी। पर्दा प्रथा इस सीमा तक बढ़ गई कि स्त्रियों के लिए कठोर एकान्त नियम बना दिए गये। शिक्षण की सुविधा पूर्णरूपेण समाप्त हो गई।[4]

2. विषय एवं अध्ययन क्षेत्र

विषय – लैंगिक असमानता का अध्ययनः हरियाणा के नूहं जिले के संदर्भ में

अध्ययन क्षेत्र –

नूहं जिला हरियाणा के 22 जिलों में से है। नूहं जिला 2005 में बना। इसके पहले यह मेवात जिले के नाम से जाना जाता था। इसका नाम 2016 में नूहं रखा गया। यह हरियाणा का सबसे पिछड़ा क्षेत्र है। इसमें 5 तहसीले है, जो नूहं, फिरोजपुर, झिरका, पुनाहा, तावडू है।

[4] उपरोक्त

इसमें 6 ब्लॉक – नूहं, तावडू, नगीना, पुनाहा, फिरोजपुर और झिरका है। इसमं 431 ग्राव है। जो कि 297 ग्राम पंचायतोंके माध्यम से संचालित किए जाते है। ग्राम पंचायतों के ऊपर खंड और उसके ऊपर तहसील होती है। इसमें महिला साक्षरता दर 36.60 प्रतिशत है। यहाँ पर सभी क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति बहुत खराब है।

नूहं जिले की संक्षिप्त जानकारी

क्षेत्रफल	1860 वर्गकिलोमीटर (720 वर्गमील)
जनसंख्या	10,89,406
पुरूष महिला अनुपात	906
विकास प्रतिशत	37.94 प्रतिशत
साक्षरता दर	58 प्रतिशत
जनसंख्या घनत्व	590 प्रति वर्ग किलोमीटर (1500 प्रति वर्गमील)
संसद के सदस्य	1
विधायक	4
उपखंडों की संख्या	2
तहसील की संख्या	5

हरियाणा में घरेलू हिंसा संबंधी तथ्य, 2011[5]

बलात्कार			दहेज हत्या			घरेलू हिंसा			मोलेस्टेशन			यौन दुराचार		
औसत	प्रतिशत	संख्या	औसत	प्रतिशत	संख्या	औसत	प्रतिशत	संख्या	औसत	प्रतिशत	संख्या	औसत	प्रतिशत	संख्या
733	2.9	3	255	1	3	2740	10.8	2.8	475	1.9	1.1	490	1.9	5.7

हरियाणा में महिला अपराध से संबंधी तथ्य[6]

अपराध	दर्ज केस
बलात्कार	70
बलात्कार का प्रयास	39
दहेज हत्या	23
कार्यस्थल पर यौन दुराचार	32
अपहरण	30
आत्मसम्मान चोट	136
लिंग चयनित गर्भपात	4
विवाह चयन का प्रतिकार	16
दहेज प्रताडना	44
घरेलू हिंसा	199
जीवन अधिकार पर प्रतिकार	130
पुलिस द्वारा अत्याचार	29
सेवा मामलों पर भ्रष्टाचार	25
संपति संबंधी अत्याचार	60

5 क्राइम रिपोर्ट, 2017 हरियाणा
6 राष्ट्रीय अपराध औसत ब्यूरों 2014–15

ससुराल पक्षों द्वारा अत्याचार	28
महिला अधिकारों का हनन	19
पीछा करना	2
महिला विरूद्ध हिंसा	41
यौन दुराचार कार्यस्थल के साथ	35

हरियााणा में लिंग चयनित गर्भपात में 4 केस दर्ज हुए परंतु वास्तविक स्थिति में लिंग चयनित गर्भपातों की संख्या बहुत अधिक है। हरियाणा में ना केवल हरियाणा राज्य वरन् देश के विभिन्न राज्यों से भी लोग चोरी छिपे लिंग चयनित गर्भपात करवाने आते है। इसमें बहुत कम मामले ही सामने आ पाते है।

53 प्रतिशत परिवार कन्याओं के दहेज पर खर्च करते है जबकि मात्र 23 प्रतिशत परिवार महिला शिक्षा पर खर्चा करते है। **अपनी बेटी अपना धन योजना** के तहत लडकी के 18 वर्ष के होने पर उसके नाम 25000 का बॉन्ड दिया जाता है। यह योजना लडकियों की शिक्षा में वृद्धि करने के लिए बनाई गई है। इंडिया स्पेण्ड के अनुसार भारत में 240 मिलियन बालिका वधूऐं है जो विश्व की एक तिहाई है। महिला श्रम योगदान का स्तर तो सोमालिया से भी निम्न पाया गया। यहां महिलाऐं आज भी लिंग आधारित कार्य करने के लिए बाध्य है और बाधित की जाती है। ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एज्यूकेशन के अनुसार हरियाणा में उच्च शिक्षा में लिंग विलम्बन कम हो रहा है। पन्द्रह से उन्नीस वर्ष की आयु में लडके लडकियां महाविद्यालय में पंजीकृत होते है लेकिन नेशनल वर्कफोर्स में महिलाओं की प्रतिशतता मात्र 27. 8 प्रतिशत है जो दर्शाती है कि शिक्षा को बीच में ही छोडने में महिलाओं की संख्या बहुत

अधिक है। कार्य करने वाली महिलाओं में 10 में से 8 अत्यंत गरीब परिवारों की होती है। कार्य करने वाली महिलाओं में मात्र 13.9 प्रतिशत महिलाऐं ही स्नातकोतर तक शिक्षित होती है। आईटी सेक्टर में एक अध्ययन में पाया गया कि एक तिहाई से अधिक महिलाऐं आईटी सेक्टर में कार्य करने के लिए प्रवेश करती है परंतु विवाह और मातृत्व के कारण केवल 5 प्रतिशत महिलाऐं ही आगे कार्य को जारी रख पाती है। 48 प्रतिशत महिलाऐं 30 वर्ष से पहले अपने नौकरी छोड देती हैं।[7]

हरियाणा के 2011 की जनगणना के अनुसार यहां 226,892 बालिका वधूऐं है। आईसीआरडब्ल्यू के अनुसार यहां 2012—13 में लडकियां 18 वर्ष की आयु को पार कर पायी। जिनका जन्म 1994 में हुआ। इससे स्पष्ट है कि इससे पहले लडकियों और महिलाओं की ऑनर किलिंग, कन्याभ्रूण हत्या बहुत अधिक होती थी।[8]

3. शोध के उद्देश्य

1. शोध में चयनित ग्रामों में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक—सांस्कृतिक दशा और महिला शिक्षा, व्यवसायगत, जातिगत प्रस्थिति के मध्य संबंध ज्ञात करना

2. शोध में चयनित ग्रामों में परम्पराओं के पालन और पितृसत्तात्मक समाज के प्रभाव का महिलाओं की सामाजिक—सांस्कृतिक दशा पर प्रभाव ज्ञात करना

3. शोध में चयनित ग्रामों में लैंगिक भेदभाव की अवधारणा में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना

---

[7] इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वीमैन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एण्ड इंटरडिसीप्लेनरी, 2013
[8] जनगणना रिपोर्ट, 2011, जनसांख्यिकी एवं जनगणना निदेशालय, हरियाणा सरकार।

4. शोध में चयनित ग्रामों में ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक तथा राजनीतिक दशा का खाप पंचायत के प्रभाव, जातीय दबाव, शिक्षा, पुरूष सत्तात्मक समाज के प्रभाव, महिला वर्ग और चेतना के प्रभाव के मध्य संबंध ज्ञात करना

5. शोध में चयनित ग्रामों में सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर महिलाओं की दशा सुधारने में होने वाले प्रयासों और प्रभावों को ज्ञात करना

अध्ययन की रूपरेखा

1. नूहं जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन

2. लैंगिक असमानता से संबंधित साहित्य समीक्षा

3. सामाजिक एवं राजनीति क्षेत्र में लैंगिक असमानता की स्थिति

4. ग्रामीण महिलाओं की स्थिति परिवर्तन में सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास एवं प्रभाव

5. निष्कर्ष

1. प्रथम अध्याय – नूहं जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत नूहं जिले का परिचय, उद्देश्य, परिकल्पना, अध्ययन की पद्धति एवं अध्ययन के स्त्रोतों की विवेचना की जाएगी।

2. द्वितीय अध्याय – लैंगिक असमानता से संबंधित साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत अध्याय में वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर लैंगिक असमानता पर पूर्व में हो चुके शोध कार्यों की समीक्षा प्रस्तुत की जाएगी।

3. तृतीय अध्याय – सामाजिक एवं राजनीति क्षेत्र में लैंगिक असमानता की स्थिति

प्रस्तुत अध्याय में लैंगिक असमानता के सदंर्भ में सामाजिक रीति–रिवाजों, प्रथाओं, परम्पराओं का विश्लेषण किया जाएगा।

4. चतुर्थ अध्याय – ग्रामीण महिलाओं की स्थिति परिवर्तन में सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास एवं प्रभाव

प्रस्तुत अध्याय में महिलाओं की स्थिति सुधार के लिए किए गए सभी प्रयासों का अध्ययन किया जाएगा। इसमें शिक्षा, उत्तराधिकार के नियम, महिला संबंधी संवैधानिक प्रावधानों, अपनी बेटी अपना धन योजना का विश्लेषण किया जाएगा।

5. पंचम् अध्याय – निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए लैंगिक असमानता की वर्तमान स्थिति, कारण और प्रभावों एवं प्रासंगिकता का विश्लेषण किया जाएगा।

5. शोध परिकल्पना

1. हरियाणा के नूहं (मेवात) जिले में लैंगिक असमानता की स्थिति में सुधार हो रहा है।

2. हरियाणा के नूहं (मेवात) जिले में महिलाओं की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है।

3. हरियाणा के नूहं (मेवात) जिले में सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति में सकारात्मक सुधार हो रहा है।

4. हरियाणा के नूहं (मेवात) जिले में लैंगिक असमानता को दूर करने हेतु किए जा रहे सरकारी और गैर सरकारी प्रयास प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो रहे है।

6. शोध प्रश्न

1. क्या लैंगिक असमानता महिला शिक्षा के द्वारा दूर की जा सकती है?

2. क्या लैंगिक असमानता के लिए किए गए राजनीतिक, कानूनी और आर्थिक प्रयास प्रभावशाली सिद्ध हो रहे है?

3. क्या लैंगिक असमानता की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है?

4. क्या लैंगिक असमानता को दूर करने के लिए कोई सकारात्मक दिशा प्राप्त हुई है।

5. क्या महिलाओं की दशा में कोई विशेष सुधार हुआ है?

7. शोध पद्धति

प्रस्तावित शोध प्रबंध में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया जाऐगा। ऐतिहासिक शोध विधि द्वारा अतीत के विचारो के आधार पर वर्तमान में प्रासंगिकता ज्ञात करना। इस विधि से ग्रंथालयों से विचारो की विगत घटनाओं एवं पद्धतियों के आधार पर वर्तमान परिदृश्य को समझा जा सकेगा। विश्लेषणात्मक विधि द्वारा पहले से उपलब्ध तथ्यों या जानकारी का उपयोग किया जाएगा। तुलनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत किन्हीं मानदण्डों के आधार पर दो या दो से अधिक परिस्थितियों अथवा तथ्यों की तुलना की जा सकेगी। शोध हेतु अनेक प्रकार की सामग्री के संकलन हेतु प्राथमिक सामग्री व द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया जाएगा।

प्राथमिक स्त्रोत – इस शोध कार्य में लैंगिक असमानता के विचारों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता हेतु प्राथमिक सामग्री का प्रयोग किया जाएगा। प्राथमिक सामग्री को एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा।

1. साक्षात्कार

2. अनुसूची

3. प्रश्नावली

वर्तमान काल के विद्वानों द्वारा लिखित सहायक ग्रंथों से सामग्री प्राप्त की जा सकेगी। अनेक पत्र–पत्रिकाओं, इंटरनेट, जर्नल, शोध ग्रंथों आदि की सहायता ली जाएगी। इस अध्ययन में सर्वेक्षण एवं विकासात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जाएगा। इसमें कलाकृति, डायरी, आत्मकथा आदि भी शामिल किए जाएगें।

द्वितीयक स्त्रोत – इस शोध कार्य में लैंगिक असमानता का अध्ययन संबंधित विचारो का विश्लेषण हेतु द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया जाएगा जो निम्नलिखित है–

- पुस्तकालय में उपलब्ध सभी सूचनाऐं
- पुस्तकें
- लेख एवं पत्र–पत्रिकाऐं
- पांडुलिपि
- पूर्व में हुए शोध अध्ययन

निदर्शन – शोध में अदैव निदर्शन द्वारा 300 महिलाओं का चयन किया जाएगा।

8. साहित्य अवलोकन

ए.डी.मिश्रा ने अपने कार्य 'प्राब्लम्स एंड प्रास्पेक्टस ऑफ वर्किंग वूमन इन अरबन इंडिया' में कामकाजी मध्यमवर्गीय शहरी महिलाओं की समस्याओं पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डाला हैं कि महिलाओं की समस्याओं पर बहुत कम ध्यान दिया जाता हैं। चाहे महिला की

पारिवारिक समस्या हो या कार्यात्मक, दोनों ही क्षेत्रों में उनकी समस्याओं को नजरअंदाज किया जाता हैं।[9]

एलिस एम. योहालेम ने अपनी पुस्तक 'वूमन रिटर्निंग टू वर्क' में उन मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित किया हैं जो वयस्क महिलाओं की श्रम शक्ति पुनः प्रवेश पर केन्द्रित हैं। वे परिदृश्य सामान्यतया अग्रणी औद्योगक राष्ट्रों के अनुभवों पर आधारित है जो कि संघीय गणराज्य जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, यू.के., व यू.एस. हैं।[10]

अंजना मेत्रा ने अपने प्रस्तुत लेखों के संग्रह **'वूमन इन ए चेन्जिग सोसाइटी'** में यह स्थापित करते हें कि महिला हमारे समाज का केन्द्र होती हें। इस पुस्तक में महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली बहु आयामी भूमिका पर बल दिया है व विविध विषयों को समाविष्ट किया है जैसे समाज में महिला, स्वतंत्रता के बाद भारत में महिलाओं की प्रस्थिति, शहरी महिलाओं की समस्याएँ व परिदृश्य, कार्य स्थल पर यौन उत्पीडन इत्यादि।[11]

बी.के.पॉल ने 'प्राब्लम्स एंड कान्सनर्स ऑफ इंडियन वूमन' में महिलाओं के सामने कठिन परिश्रम के बावजूद आने वाली बहुत सी समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास किया हैं। महिलाओं के सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं के कारण है अनुचित न्याय, सामन्तवादी लोकाचार, सामाजिक पिछडापन, पूँजीवादी व्यवस्था, धार्मिक अंधविश्वास व समाज की संकुचनशीलता। इस कार्य के अन्तर्गत पृथक्करण, अन्याय व अन्य सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध सुझाव दिए हैं। यह उन्हें अंधेरे में आशा की किरण व जीत का आश्वासन देता हैं।[12]

---

[9] मिश्रा, ए.डी., (1994): ''प्राब्लम्स एंड प्रोस्पेक्टस ऑफ वर्किंग वूमन इन अरबन इंडिया'' मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
[10] एलिस एम. सेहालेम, (1990): ''वूमन रिटर्निंग टू वर्कः पॉलिसी एंड प्रोग्राम इन फाइव कन्ट्रज'' राउटलेज प्रकाशन, लंदन
[11] मेत्रा, अंजना;(1985): ''वूमन इन ए चेन्जिग सोसाइटी'' कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, कैम्ब्रिज
[12] पॉल, बी.के.;(1987): ''प्राब्लम्स एंड कार्न्सनस् ऑफ इंडियन वूमन'' पैरेग्राइन पब्लिकेशन

बासोबी सरकार ने 'वर्किंग मदर्स एंड एडोलसेंट वेल बिइंग' में महिलाओं का पारिवारिक वातावरण और उनके किशोरवय बच्चों के मध्य सामंजस्य उनके कार्य के स्तर को कितना प्रभावित करता है कि छानबीन कर निष्कर्ष प्रतिपादित करने के क्षेत्र में कदम उठाए हैं। जब एक महिला कार्य हेतु बाहर जाती हैं तो भी उसकी गुह्य मित्रार्थी की भूमिका लुप्त नहीं होती। वास्तव में उसे एक साथ तीन भूमिकाएँ क्रमशः एक माँ, पत्नी व कार्यकर्मी निभानी पडती हैं।[13]

चेतना कालबाग ने अपनी सात भागों में प्रकाशित पुस्तकों की श्रेणी **वूमन एंड डेवलपमेंट** में महिलाओं की राष्ट्र के सामाजिक व आर्थिक विकास में भूमिका पर प्रकाश डाला हैं। महिला की भूमिका जो उन्होनें सामाजिक परिवर्तन व आधुनिकता की शाखा के नए निर्णायक आयाम के रूप में अर्जित की हैं। उन्होनें महिलाओं की राष्ट्र के विकास में भूमिका का मूल्यांकन करने का प्रयास किया हैं।[14]

दीपा माथुर ने 'वूमन फैमिली एंड वर्क' में विवाहित शहरी कामकाजी महिलाओं और उनकी गृहणी व कामकाजी महिला की बहुल भूमिका में समायोजन व सामंजस्य का विश्लेषण किया हैं।[15]

धर्मवीर व कमलेश महाजन ने 'कन्टेम्परेरी इंडियन वूमन' छः भागों की पुस्तक में महिलाओं से जुडे वर्तमान के महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जैसे आधुनिकीकरण व महिलाओं का विकास, हिंसा, शोषण व महिला अधिकार, महिलाओं की सामाजिक स्थिति व उत्तरदायी तत्व महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी, शिक्षा में बदलती भूमिका व उभरती समस्याएँ इत्यादि।[16]

---

[13] सरकार, बासोबी;(1994): ''वर्किंग मदर्स एंड एडोलसेंट वेल बिइंग'' सर्किल बुक
[14] कालबाग, चेतना;(1991): ''वूमन एंड डेवलपमेंट'' जे.एच.यू. प्रेस
[15] माथुर, दीपा;(1992): ''फैमिली एंड वर्क'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
[16] महाजन, धर्मवीर और महाजन, कमलेश;(1996): ''कंटेम्पररी इंडियन वूमन'' दीप प्रकाशन, नई दिल्ली

डॉ. वी.मोहिनी गिरी ने अपने कार्य **'इमेन्सीपेशन एंड एम्पावरमेंट ऑफ वूमैन'** में महिलाओं के मुक्ति और सशक्तीकरण की प्रक्रिया की प्रमाणिक प्रस्तुति दी हैं। महिलाओं से संबंधित बहुल पक्षों, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व सशक्तीकरण, लिंग असमानता, महिला अधिकार, कानून, महिला के प्रति हिंसा मीडिया की भूमिका आदि पर चर्चा की हैं।[17]

डॉ. फलेन्द्र के. सुडान ने 'वूमन वर्कर्स इन इंडिया' में कामकाजी महिलाओं की भारतीय परिदृश्य में बहुआयामी पहलुओं को प्रकाशित करने का प्रयास किया हैं। भारत में महिलाओं का सामाजिक आर्थिक स्तर उनकी स्थिति और उनके द्वारा निभाई जा रही भूमिका के मध्य असमानता का एक विशिष्ट उदाहरण है जो उन पर सामाजिक परम्पराओं के कानून व संविधान द्वारा थोपा गया हैं।[18]

फलेन्द्र के. सूडान व निर्मल कुमार गुप्ता का कार्य **'वूमन एट वर्क इन डेवलपिंग इकॉनोमी'** विकसित अर्थव्यवस्था में महिलाओं के सामने आने वाली जटिल समस्याओं से संबंधित है। यह पुस्तक शिक्षा के असर, विशिष्ट शहरी वातावरण सुधरते जीवन स्तर, महिलाओं के परिवार के आकार को लेकर रवैया, परिवार निर्माण के लिए दिए जाने वाले समय, परिवार की समृद्धि के लिए कार्यक्रमों के प्रति अनुक्रिया का विश्लेषण करती है। यह पुस्तक महिलाओं के विकास की योजना के लिए प्रस्तावना देती हैं।[19]

जोयर्स लिब्रा, जॉय पॉलसन एंड जेना एवरेट ने अपनी पुस्तक **'वूमन एंड वर्क इन इंडिया : कन्टीन्यूटी एंड चेंज'** में असंगठित क्षेत्रों में महिलाओं के कार्य, वृहमत असंगठित क्षेत्रों से डॉक्टर, शिक्षक, वकील, राजनीतिज्ञ, कलाकार व पत्रकार से लकर सफाईकर्मी, फार्म

---

[17] मोहिनी;(1998): ''एमेन्सीपेशन एंड एम्पावरमेंट ऑफ वूमन'' ज्ञान पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली
[18] सूडान;(1991): ''वूमन वर्कर्स इन इंडिया'' अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
[19] सूडान;(1990): ''वूमन एट वर्क'' अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली

कार्यकर्मी, निर्माण कार्यक्रमों, गलियों में फेरी लगाने वाले, गृहणी इत्यादि को प्रतिबिम्बित किया हैं।[20]

लीला कस्तूरी, सुलभा ब्रह्मा और रेनना झाबवला ने 'वूमन वर्कर्स इन इंडिया' में देश के शहरी औद्योगिक क्षेत्रों में अनौपचारिक महिलाकर्मियों के लिए राष्ट्र द्वारा प्रस्तावित समृद्धि योजनाओं, कार्यक्रमों में विभाजन न्याय के ऊपर अपने विचार प्रस्तुत किया हैं। इन परिप्रेक्ष्य में ये पुस्तक कुछ वास्तविक जीवन के व्यक्तिगत अध्ययन पर केन्द्रित हैं।[21]

मौली जोसेफ ने 'वूमन पार्टीसिपेशन एंड डेवलपमेंट स्ट्रेटजी' में महिलाओं की विकास में भागीदारी के सैद्धांतिक, आनुभविक, विविध आयामों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। आज विश्व के तीव्रगामी विकास में महिलाओं का प्रमुख योगदान हैं। विकसित अर्थव्यवस्था में विकास कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी को बढावा देने वाले व रोकने वाले कारकों पर अन्तर्दृष्टि भी देता हैं।[22]

पी.डी. साकिया ने 'इंडियन रूरल वूमन' में देश की उत्तर पूर्वी क्षेत्र की ग्रामीण महिलाओं का आन्तरिक अध्ययन प्रस्तुत किया हैं। यह मान्यता है कि समाज में महिलाओं का स्तर चाहे वों विकसित देश हो या विकासशील देश पुरूषों से कमतर ही हैं। यह अध्ययन असम की महिलाओं के व्यस्त 14 घंटों के कठिन परिश्रम व कडी मजदूरी पर प्रकाश डालता हैं।[23]

---

[20] जोएस, लिब्रा,;(2004): ''वूमन एंड वर्क इन इंडिया कन्ट्यूनिटी एंड चेंज'' प्रोमिला एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली
[21] कस्तुरी, लीना; (2010): सुलभा व रेनना झाबवला; ''वूमन वर्कर्स इन इंडिया'' अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
[22] जोसेफ, मौली;(2013): ''वूमन पार्टीसिपेशन एंड डेवलपमेट स्ट्रेटजी'' राउटलेज पब्लिकेशन
[23] साकिया, पी.डी.;(2016): ''इंडियन रूरल वूमन'' रावत पब्लिकेशन, जयपुर

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता, सुशील; (2005): 'वीमैन डवलपमेंट इन इंडियाः ए कम्प्रेटिव स्टडी'
2. महाजन, धर्मवीर; (2004): 'भारतीय समाजः मुद्दे एवं समस्याऐं', विवेक प्रकाशन, दिल्ली
3. जोशी, रूपा; (2006): 'भारत में स्त्री और समानता' हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
4. बेग, अली; (1988): 'वीमैन्स राइट, वीमैन्स स्टेटस एण्ड रिलीजियस फण्डामेंन्टेलिस्म;, सोशल एक्शन, अंक 38, 78–83
5. सेन, अमर्त्य; (2001): 'जेण्डरः सेवन टाइप्स ऑफ इनइक्वलिटी इन हयूमन राइट्स विजन', अंक 22, दिसम्बर
6. व्हाइटिंग,बीटराइस एंड एडवर्ड,कारोलेन; (1973): ए क्रॉस कल्चरल एनालिसिस ऑफ सेक्स डिफरेंसेज इन द बिहेव्हियर ऑफ चिल्ड्रन एज्ड थ्री थ्रो इलेवन, जरनल ऑफ सोशल सायकोलॉजी
7. जनगणना रिपोर्ट, 2011, जनसांख्यिकी एवं जनगणना निदेशालय, हरियाणा सरकार।
8. क्राइम रिपोर्ट, 2017 हरियाणा
9. देओल, सतनाम सिंह (2015): 'ऑनर किलिंग इन हरियाणा स्टेट, इंडिया : ए कंटेंट एनालिसिस'
10. आदित्य परिहार और अमृत (2015): 'क्राइम एगेन्स्ट वीमैन इन हरियाणा : एन एनालिसिस' इंटिरनेशन जर्नल ऑफ ह्यूमनिटीज एण्ड सोशल साइंसेज इंवेन्शन, अंक 4, इश्यू 11, नवम्बर, 2015, पृ. 16–24,
11. राष्ट्रीय अपराध औसत ब्यूरों 2014–15
12. इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वीमैन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एण्ड इंटरडिसीप्लेनरी, 2013
13. जनगणना रिपोर्ट, 2011, जनसांख्यिकी एवं जनगणना निदेशालय, हरियाणा सरकार।
14. मिश्रा, ए.डी., (1994): ''प्राब्लम्स एंड प्रोस्पेक्टस ऑफ वर्किंग वूमन इन अरबन इंडिया'' मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
15. एलिस एम. सेहालेम, (1990): ''वूमन रिटर्निंग टू वर्कः पॉलिसी एंड प्रोग्राम इन फाइव कन्ट्रज'' राउटलेज प्रकाशन, लंदन
16. मेत्रा, अंजना;(1985): ''वूमन इन ए चेन्जिग सोसाइटी'' कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, कैम्ब्रिज
17. पॉल, बी.के.;(1987): ''प्राब्लम्स एंड कार्न्सनस् ऑफ इंडियन वूमन'' पैरेग्राइन पब्लिकेशन
18. सरकार, बासोबी;(1994): ''वर्किंग मदर्स एंड एडोलसेंट वेल बिइंग'' सर्किल बुक

19. कालबाग, चेतना;(1991): ''वूमन एंड डेवलपमेंट'' जे.एच.यू. प्रेस

20. माथुर, दीपा;(1992): ''फैमिली एंड वर्क'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर

21. महाजन, धर्मवीर और महाजन, कमलेश;(1996): ''कंटेम्परारी इंडियन वूमन'' दीप प्रकाशन, नई दिल्ली

22. मोहिनी;(1998): ''एमेन्सीपेशन एंड एम्पावरमेंट ऑफ वूमन'' ज्ञान पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली

23. सूडान;(1991): ''वूमन वर्कर्स इन इंडिया'' अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली

24. सूडान;(1990): ''वूमन एट वर्क'' अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली

25. जोएस, लिब्रा,;(2004): ''वूमन एंड वर्क इन इंडिया कन्ट्यूनिटी एंड चेंज'' प्रोमिला एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली

26. कस्तुरी, लीना; (2010): सुलभा व रेनना झाबवला; ''वूमन वर्कर्स इन इंडिया'' अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली

27. जोसेफ, मौली;(2013): ''वूमन पार्टीसिपेशन एंड डेवलपमेट स्ट्रेटजी'' राउटलेज पब्लिकेशन

28. साकिया, पी.डी.;(2016): ''इंडियन रूरल वूमन'' रावत पब्लिकेशन, जयपुर